ISSN : 2581-8848

विशेषांक भाग – II

जनवरी, 2026

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. प्रदीप पाटील

संपादकीय

गीत और ग़ज़ल सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं है। वास्तविक रूप में हिंदी साहित्य के व्यापक परिदृश्य में गीत और ग़ज़ल दो ऐसे प्रमुख विधाएँ हैं जिनके माध्यम से मानव जीवन की संवेदनाएँ, विचार, अनुभूतियाँ और सामाजिक यथार्थ अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं। साहित्य के शुरुआती दौर से ही गीतों की भूमिका अहम रही है। लिखित साहित्य से पहले मौखिक रूप में गीत मानवीय संवेदना को चित्रित करने का काम करते रहे हैं। साथ ही अपनी परंपराओं की मुखरवानी गीत ही रहे हैं। गीत भावनात्मक सौंदर्य, प्रेम, करुणा और प्रकृति के सौंदर्यबोध का प्रतिनिधित्व करते हैं। ग़ज़ल की शुरुआत भले ही हाला और सुंदरी से शुरू हुई लेकिन कालांतर में ग़ज़ल ने जीवन की गूढ़ सच्चाइयों, विडंबनाओं और सामाजिक विषमताओं को लयात्मक रूप में प्रस्तुत किया। बदलते समय, समाज और राजनीति के साथ इन विधाओं का रूप, विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति निरंतर परिवर्तित होती रही है। इसी परिवर्तनशीलता के अध्ययन से इनकी विविधता और गहराई का बोध होता है। इस विशेषांक के अंतर्गत "हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य" इस विषय पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया है।

हिंदी गीत और ग़ज़ल समाज के दर्पण हैं, जो समय-समय पर बदलते सामाजिक परिवेश, मानवीय संबंधों और मूल्यबोध को प्रतिबिंबित करते रहे हैं। इन विधाओं ने लोकमानस की भावनाओं, संघर्षों, आकांक्षाओं और विसंगतियों को बड़ी संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया है। साथ ही गीत और ग़ज़ल के अंतर्गत स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। स्त्री की अस्मिता की बात करते हुए उनकी समस्याओं पर बेबाकी से बात की गई है और की जा रही है। साथ ही गीत और ग़ज़ल के माध्यम से राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विषयों पर गीतकार एवं और ग़ज़लकारों ने लेखनी चलाई है। जिसका विस्तार से विवेचन इस विशेषांक के कई लेखों में देखने मिलेगा। इस विशेषांक के माध्यम से इस बात की ओर भी ध्यान दिया गया है कि गीत और ग़ज़ल सिर्फ मनोरंजन के साधन न होते हुए यह समाज को आईना दिखाने का काम बहुत ही कर रहे हैं और यह हमारे मानवी संवेदनाओं से गहराई से जुड़े हुए हैं।

प्रस्तुत अंक में व्यक्त विचार शोधकर्ता के अपने हैं, संपादक इससे सहमत हो यह जरूरी नहीं।

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात।

अनुक्रम

Sr. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	हिंदी गीत और ग़ज़ल: सत्ता-संरचना, साम्प्रदायिक तनाव और आर्थिक विषमता का काव्यात्मक दस्तावेज	प्रो. डॉ. जिजाबराव व्ही. पाटील	1-4
2	मुनव्वर राना की ग़ज़ल : विविध परिदृश्य	डॉ. दीपक रामा तुपे	5-12
3	गीतकार जावेद अख्तर के हिंदी फिल्म गीतों में राष्ट्रभक्ति	प्रो. परसराम रामजी रगडे	13-16
4	हिंदी ग़ज़ल का बहुआयामी परिदृश्य	डॉ. भाऊसाहेब एन. नवले	17-20
5	शैलेंद्र के गीतों में जीवन दर्शन और सामाजिक चेतना	डॉ. प्रकाश विष्णु कांबळे	21-24
6	साठोत्तरी हिंदी गजल साहित्य में सामाजिक परिदृश्य (गजलकार धूमिल, दुष्यंतकुमार जहीर कुरैशी,नीरज के संदर्भ में)	डॉ. रांजणे दयानंद शंकर	25-27
7	लोक, प्रकृति और संघर्ष: हिन्दी गीत और ग़ज़ल में आदिवासी संवेदना	प्रा.शेषराव सु. माने	28-33
8	हिंदी सिनेमा एवं गजल एक परिदृश्य	प्रो.डॉ.अजयकुमार कृष्णा कांबळे	34-36
9	गुलज़ार के गीत और ग़ज़लों में सामाजिक, आर्थिक, राजकीय और सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ	डॉ देवीदास क बामणे 'संघर्ष'	37-41
10	हिंदी ग़ज़ल : प्रतिरोध और चेतना	गुलामगौस फिरोज तांबोळी	42-44
11	दुष्यंतकुमार के गजलों में सामाजिक विमर्श	डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	45-48
12	हिंदी फ़िल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	प्रा. डॉ. सतीश दत्तात्रय पाटील	49-52
13	लोकगीत, साहित्य और संस्कृति	प्रा. डॉ. ऐनुर एस. शेख	53-55
14	डॉ ज़हीर कुरैशी की गजलों में सामाजिक चेतना	प्रा. शौकत आतार	56-58
15	लोकगीत, साहित्य और संस्कृति : एक बहुआयामी अध्ययन	रजनी साहू	59-62
16	गुलजार: अनुभूतियों के शिल्पकार	डॉ. गीतिका तंवर	63-67
17	गीतकार प्रदीप के गीतों में मानवीय चेतना	डॉ. मालोजी अर्जुन जगताप	68-73
18	जयशंकर प्रसाद के नाट्य गीतों की संरचना एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	डॉ. सोनू जेसवानी	74-84
19	रामकाव्य में गीतात्मक अभिव्यक्ति	डॉ. सुमन रानी	85-88
20	हिंदी गीत और गजल : सामाजिक परिद्रश्य	डॉ. शाहीन अब्दुल अज़ीज़ पटेल	89-92
21	धार्मिक परिदृश्य के संदर्भ में हिंदी फ़िल्मी गीत	डॉ उत्तम राजाराम आळतेकर	93-97
22	समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में जनपक्षधर राजनीति और प्रतिरोध के स्वर का मूल्यांकन	विजय कुमार	98-102
23	गज़ल में सामाजिक परिदृश्य	डॉ.दादासाहेब सुखदेव खांडेकर	103-105
24	'ज़हीर कुरैशी की ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक विषमता'	प्रा.हिरामण देवराम टोंगारे	106-109
25	दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लः प्रगतिशील चेतना	प्रा.डॉ. हनुमंत दत्तु शेवाळे	100-114
26	धूमिल की कविता में चित्रित राजनीतिक परिदृश्य : संसद से सडक तक काव्य संग्रह के संदर्भ में	प्रा.डॉ.माधुरी परशुराम कांबळे	115-118
27	आधुनिक हिंदी गजलों में प्रगतिशीलता	डॉ. मच्छिंद्र भगवान कुंभार	119-123
28	हिंदी गीत–ग़ज़ल में प्रगतिशील चेतना (एक समालोचनात्मक अध्ययन)	डॉ प्राची अनर्थ	124-126
29	हिंदी ग़ज़लों में प्रगतिशील चेतना	डॉ. संतोष वसंत कोळेकर	127-131

30	हिंदी गजलों में सामाजिक चेतना	डॉ. शैलजा धोंडिराम गवळी	132-134
31	अदम गोंडवी के गजलों में चित्रित राजनीतिक परिदृश्य	डॉ. प्रकाश राजाराम मुंज	135-138
32	प्रेम तथा व्यवस्था चित्रण का सशक्त माध्यम 'गज़ल'	प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले	139-141
33	हिंदी फ़िल्मी गीतकार एवं ग़ज़लकार : एक अध्ययन	प्रो. डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी रिज़वाना शानूर मुलाणी	142-145
34	फ़िल्मी गीतों पर डॉ. सुनील देवधर का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण	लता वर्मा डॉ. सोनू जेसवानी	146-151
35	हिंदी साहित्य में नवगीत का विकास और प्रवृत्तीयाँ	किशोरी सुरेश टोणपे	152-155
36	इक्कीसवीं सदी के हिंदी सिनेमा गीतों में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. सपना तिवारी चित्रा कटकवार	156-158
37	'दुष्यंत' के बाद की गज़लों में राजनैतिक परिदृश्य	प्रा. विक्रम सखाराम राजवर्धन डॉ. प्रा.विश्वनाथ महादू देशमुख	159-161
38	हिंदी फिल्मी गीतों में चित्रित स्त्री विमर्श	हणमंत परगोंडा कांबळे	162-165
39	हिंदी फिल्मी गीतों में सामाजिक संवेदना	ऐश्वर्या संजय शाह	166-168